

वर्ष -12

फरवरी, 2017

अंक-130

Regd. Postal No. Dehradun-328/2016-18
Registered News Paper RNI No. UTTBIL/2006/19407

सहायकारी शक्तियों के सूक्ष्म संरक्षण में

सत्य देव संवाद

इस अंक में

जीवन में सफलता	02	तैरिये यही जीवन है.	09
देववाणी	03	यूँ निखारे त्वचा और बाल	10
सुहागिन कौन?	04	Success not by Cheating	12
अपने आपको जानें ओर पहचानें	05	महाशिविर रिपोर्ट	14
रिश्तों की अहमियत	06	न्यूजसी केन्द्र समाचार	29
भजन	07	प्रेरणास्पद उद्बोधन	31
दृष्टि	08	भावी शिविर, रुड़की	32

जीवन व्रत



‘सत्य शिव सुन्दर ही मेरा परम लक्ष्य होवे,
जग के उपकार ही में जीवन यह जावे।’

- देवात्मा



प्रधान सम्पादक

नवनीत अरोड़ा

सहसम्पादक मण्डल

अनिता, चन्द्र गुप्त, वीरेन्द्र अग्रवाल

(सभी पद अवैतनिक हैं।)

ग्राफ़िक डिज़ाईनर : प्रमोद कुमार कुलश्रेष्ठ

For Motivational Talks/Lectures/Sabhas :

Visit our channel SHUBHHO ROORKEE on

www.youtube.com

लेखक के सभी विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

वार्षिक सदस्यता - 100/-, सात वर्षीय - 500/-, पन्द्रह वर्षीय - 1000/-

मूल्य (प्रति अंक): रुपये 9/-

सम्पर्क सूत्र :

पत्रिका सम्बन्धी किसी भी जानकारी हेतु

दूरभाष संख्या: 01332-272000, 94672-47438, 99271-46962 (संजय धीमान)

समय : प्रतिदिन सायं 5:00 से सायं 9:00 तक (रविवार को छोड़कर)

e-mail: Shubhho.rke@gmail.com or navneetroorkee@gmail.com

जीवन में सफलता

जीवन में सफल होना है तो चार वाक्यों को कचरे के डिब्बे में डाल दो-

- (1) लोग क्या कहेंगे (2) मुझसे नहीं होगा
(3) अभी मेरा मूड नहीं, और (4) मेरी तो किस्मत ही खराब है।

ये वे चार वाक्य हैं जो आदमी को आगे नहीं बढ़ने देते। चलो, उठो, आगे, बढ़ो। क्यों सुस्त पड़े हो? जो पाना है, उसे पाने के लिए पूरी ताकत झोंक दो। तुम्हें आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता।

CHANGE

*If you fail to achieve your dreams change your ways,
not your principles. Tree changes their leaves not roots.*

जीत और हार

जीत और हार आपकी सोच पर ही निर्भर करती है।
मान लो तो हार होगी और ठान लो तो जीत होगी।

Think it over!

Strength grows when we dare.

Unity grows when we cheer.

Affection grows when we share.

Relation grows when we care.

मेरे पास क्या है?

किसी के पास कुछ न हो तो दुनिया हँसती है,
और कुछ हो तो दुनिया जलती है।
मेरे पास आपके लिए एक अनमोल चीज़ है- दुआ,
जिसके लिए दुनिया तरसती है।

विपत्ति और कष्ट में भी बुद्धिमान उत्साह नहीं छोड़ते।



देववाणी



तुम अपनी नीचता से मुझे नीच नहीं बना सकते, मैं तुम्हारे साथ रहकर भी तुम्हारी बुरी रंगत ग्रहण नहीं कर सकता। तुमको या तो खुद मेरी भली रंगत ग्रहण करनी पड़ेगी और या बुराई का अनुरागी रहकर और मुझे क्लेश देकर और खुद क्लेश पाकर एक दिन मेरे पास से भाग जाना पड़ेगा।

- देवात्मा

आपकी खुशी में आपके साथ सिर्फ़ वो होगा, जिसे आप प्यार करते हैं।
पर आपके गम में सिर्फ़ वही साथ होगा, जो आपसे प्यार करता है।

CHOICE

No matter how painful or difficult decisions
you make in life, as long as you can sleep well at night,
it means you have not made the wrong choice.

गुस्सा क्या है?

किसी भी ग़लती की सजा खुद को देना।

When the ego works without expectations,
false identities begin to drop away.

That is a promise.



गुदगुदी



पत्नी (पति से): जी आपको मुझमें क्या अच्छा लगता है, मेरी समझदारी या मेरी ब्यूटी।

पति : मुझे तो ये तुम्हारी मज़ाक करने की आदत बहुत अच्छी लगती है।

जीवन की बहुत बड़ी क्रीमती चीज़ें हम तब पहचान पाते हैं,
जब उन्हें खो देते हैं।

सुहागिन कौन?.....

सुहागिन का प्रचलित अर्थ है - जिसका पति जीवित हो। यानि जिसका संरक्षक, जिम्मेवार या मालिक जिन्दा हो। भारतीय परिवेश में तो एक समय तक सुहागिन की बड़ी महिमा रही है, अभी भी है। जबकि जीवन मरण मनुष्य के हाथ नहीं है, फिर भी विधवा या दुहागिन को अच्छी दृष्टि से नहीं देखा जाता रहा है, निस्सन्देह समय के साथ इस पक्ष में लोगों की सोच में काफ़ी बदलाव आया है।

आइए, हम आत्मिक दुनिया के विचार से इस शब्द का अर्थ समझने का प्रयास करते हैं। अध्यात्म के दृष्टिकोण से सुहागिन का अर्थ किसी स्त्री के सन्दर्भ में नहीं, किन्तु व्यक्ति के सन्दर्भ में है। यानि जिस व्यक्ति के संग उसका गुरु, पथ प्रदर्शक है, जिसका कोई मार्गदर्शक व संरक्षक है, जिसके आत्मा की रक्षा व विकास की जिम्मेवारी लेने वाला उसका मालिक उसके सिर पर स्थूल या सूक्ष्म रूप में है, ऐसा सौभाग्यवान व्यक्ति सुहागिन है।

इसके विपरीत जो व्यक्ति खुद अपना मालिक है, जिसके मालिक उसके स्वयं की वासनाएं व उत्तेजनाएं हैं, जो अपनी अहं शक्तियों से परिचालित है, जो अपने गुरु व मार्गदर्शक से कागज़ का रिश्ता रखता है व दिल का योग नहीं रखता, जो स्थूल व सूक्ष्म रूप में अपने मालिक व गुरु से कोई दिशा निर्देश नहीं ले पाता, ऐसा वक्त का मारा हुआ इन्सान दुहागिन है।

सही अर्थों में सुहागिन वो नहीं, जिसका पति जीवित है, बल्कि वो व्यक्ति है, जिसकी आत्मा का कोई रक्षक व विकासक, ज्योतिदाता व शक्तिदाता उसके हृदय में वास करता है तथा वो उसके साथ दिल के तार से हर वक्त जुड़ा रहता है।

किसी मनुष्य का इससे बढ़कर और क्या सौभाग्य हो सकता है कि उसे देवजीवनधारी देवात्मा गुरु व संरक्षक तथा मार्गदर्शक के रूप में प्राप्त हो जायें। इस सौभाग्य को महसूस करने की व इस सौभाग्य को प्राप्त करने तथा संभाले रखने की अतिशय ज़रूरत है। काश, हममें से जो भी अब तक सुहागिन नहीं बन सके, वो सुहागिन बन सकें तथा जो सुहागिन हैं, वो बने रह सकें, ऐसी है शुभकामना!

- प्रो. नवनीत अरोड़ा

बेईमानी किसी भी तरह से की जाए और उस पर कैंसा भी आवरण डाला जाए, उसका दुष्परिणाम होता ही है।

दूसरे को शान्त करने के लिए स्वयं शान्त हो जाओ।

अपने आपको जानें और पहचानें

हमारी रुचि सिर्फ दूसरों को जानने और अपनी जान पहचान बढ़ाने में रहती है, खुद अपने को जानने में नहीं रहती। हमारी यह भी कोशिश रहती है कि अधिक से अधिक लोग हमें जानें, हम लोकप्रिय हों, पर यह कोशिश हम जरा भी नहीं करते कि हम अपने खुद के बारे में जानें कि हम क्या हैं, क्यों पैदा हुए हैं, किसलिए पैदा हुए हैं। हम हमारे बारे में जो कुछ जानते हैं, वह दरअसल हमारे खुद के बारे में नहीं बल्कि जो कुछ हमारा है उसके बारे में ही जानते हैं और इसे ही अपने खुद के बारे में जानना समझते हैं। जबकि यह एक ग़लतफ़हमी है क्योंकि जो जो 'हमारा' है वह 'हम' नहीं है, यहाँ तक कि हमारा 'शरीर' भी दरअसल 'हम' नहीं 'हमारा' है। इस स्थिति से हमारा बहुत बड़ा नुकसान हो रहा है। हमारा जीवन व्यतीत होता जा रहा है और हमें अभी तक यही मालूम नहीं है कि हम क्या हैं, क्यों हैं आदि। हमारा पूरा ध्यान हम बाहरी धन सम्पदा, परिवार, मकान, दुकान, घर गृहस्थी पर लगाये रहते हैं और जो असली 'हम' हैं उसे याद तक नहीं करते, जबकि अन्त समय में, जो-जो 'हमारा' है, वह सब हमसे छूट जाने वाला है। सांसारिकता में फंस कर हमें यह ख़्याल ही नहीं आता कि वास्तव में जो 'हम' हैं वह कैसे हैं, कहाँ हैं। इसका परिणाम यह होता है कि जो-जो हमारा है, उसे बचाने की कोशिश तो हम करते हैं, पर खुद अपने आपको बचाने की कोई कोशिश नहीं करते। इससे हम बाहर-बाहर तो भले ही सम्पन्न हों, पर भीतर से दरिद्र होते जा रहे हैं।

एक बहुत बड़े भवन में आग लग गई और तेज हवा के कारण देखते-देखते आग पूरे मकान में फैल गई। आग बुझाने के लिए अनेक लोग दौड़ पड़े, फायर ब्रिगेड भी आ गया। घर के लोग और पड़ोसी मिलकर ज़ल्दी-ज़ल्दी घर का सामान निकालने लगे। मकान मालिक के परिवार के हाल बेहाल थे और उन्हें कुछ सूझ नहीं रहा था। सामान निकालने वालों ने पूछा कि कुछ और अन्दर रह गया हो, तो बता दो। घर के लोग बोले-हमारे होश ठिकाने नहीं है, कृपया आप देख लें। थोड़ी देर बाद जब आग बुझा दी गई, तो मकान मालिक के परिवार के लोगों को यह होश आया कि मकान मालिक दिखाई नहीं दे रहा है, जबकि वह आग लगने से पहले से ही अपने बेडरूम में सोया हुआ था। यह पता चलते ही रोना पीटना मच गया। सबने मिलकर जो-जो हमारा (मकान मालिक का) था, वह तो बचा लिया, पर इसका ज्ञान किसी को न था कि मकान मालिक अन्दर सो रहा है, और वह अन्दर ही जल गया। ऐसा ही हमारे मामले में भी हो रहा है। हम सामान बचाने में लगे हुए हैं और खुद का हमें पता नहीं है। काश, हम सब स्वयं को जानें और पहचानें! उसकी संभाल करें। उसका विकास करें!

जो अपने हिस्से का काम किए बिना भोजन पाते हैं, वे चोर हैं।

रिश्तों की अहमियत

चलो, आज बात करते हैं, रिश्तों की अहमियत की। इन्सान का स्वभाव है कि उसे अकेले रहने से डर लगता है। मनुष्य अकेला जी नहीं सकता। उसे अपने आसपास और मनुष्यों के होने की बेहद आवश्यकता होती है, जिनके साथ वह बात कर सके, जो उसकी सारसम्भाल कर सकें, जो ज़रूरत के समय उसकी मदद कर सकें, आदि।

किन्तु, इन सम्बन्धों को बढ़ाना या बनाना कोई आसान कार्य नहीं है। उससे भी मुश्किल है, इन सम्बन्धों को निभाना और बनाए रखना। इस विषय में मनुष्य के लिए यह बात बेहद आवश्यक है कि वह ज़रूरत पड़ने पर इन सम्बन्धों के स्वार्थतापूर्ण उपयोग करने के प्रलोभन से बचा रहे। एक अच्छा सम्बन्ध बनाए रखने को यह सबसे कठिन हिस्सा होता है।

और, यह भी मानव स्वभाव में आम बात है कि जब वह जन्म लेता है, तो उसके पास केवल रिश्तेदार ही होते हैं, कोई दोस्त या साथी नहीं। उसके अलावा, वह इन रिश्तों की इतनी क्रूर नहीं करता, जितना कि वह अपनी आयु के दोस्तों एवं साथियों की लालसा करता है। परन्तु, यह महसूस करना ज़रूरी है कि सौभाग्य से तुम्हें जो रिश्तेदार मिले हैं, वे हर एक के परिवार में नहीं होते। अतः, यह तथ्य समझने और उस हेतु शुक्रगुज़ार होने की ज़रूरत है, बजाय इसके कि उन रिश्तेदारों से दूर रहने की चाहत की जाए। तुम्हें प्रयास करके भी उनसे सम्पर्क रखना चाहिए, एक मज़बूत सम्बन्ध बनाना चाहिए और उन्हें अपने जीवन का अभिन्न अंग मानते हुए उनका आभार मानना चाहिए।

जहाँ तक दोस्तों का सवाल है, सामान्यतया लोग इस सम्बन्ध को बहुत आसानी से स्वीकार करते हैं और जारी रखते हैं। परन्तु, उसमें सच्चा और निःस्वार्थी रहकर ज़रूरत के समय एक-दूसरे के काम आना ही सच्ची मित्रता का सार है। ऐसे सच्चे दोस्त पाना हर एक के नसीब में नहीं होता।

उपर्युक्त दो प्रकार के सम्बन्धों के अतिरिक्त, एक अन्य सम्बन्ध पति-पत्नी के बीच होता है, जीवनसाथी का सम्बन्ध। इसमें आवश्यक है कि दोनों एक दूसरे के साथ आदर व प्यार रखना सीखें एवं जैसे-जैसे समय के साथ एक दूसरे की अच्छाइयों व कमियों को परख लें, तो उन्हें यथावश्यक रूप से स्वीकार करते हुए रिश्ते में एक लय तथा सन्तुलन बनाकर रखें। यह बात निभाना इस रिश्ते का सबसे कठिन हिस्सा ज़रूर है, किन्तु अन्त में यही सबसे अधिक आनन्द भी देता है।

बिस्तर पर चिन्ताओं को लेकर जाना अपनी पीठ पर
गट्ठर बाँधकर सोना है।

और, अन्त में आता है, तुम्हारा अपने भगवान् या गुरु के साथ सम्बन्ध। यह एक ऐसा सम्बन्ध है, जिसका महत्त्व अब तक भी बहुत लोग नहीं समझते। यह सम्बन्ध सभी सम्बन्धों से अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि यही सम्बन्ध तुम्हारी आत्मिक सफलता व आत्मिक स्तर को निर्धारित करता है। और, तुम इस सत्य को समाज से मिले ज्ञान के कारण अन्य नए लोगों की अपेक्षा अधिक आसानी से समझ सकते हो।

अतः, तुम्हें दिए गए इस ज्ञान के खोजने का तुम इस प्रकार उपयोग करो कि यह न केवल तुम्हारे मनुष्य जीवन एवं आत्मा के लिए लाभकारी हो, वरन् दूसरों को भी इसका लाभ उठाने में मदद करो।

- परलोक सन्देश

भजन

जय हो जय हो देवगुरु भगवान,
जय हो जय हो देवगुरु भगवान।

आपके दर पर जो भी आये, आपकी शिक्षा को गर पाये;
उसका हित साधन हो अवश्य, आपके संग यदि वह जुड़ जाये।

तुमरी शिक्षा अति महान्, जय हो जय हो

आपके देवरूप के दर्शन जो भी प्राणी करता है;
आपके देव प्रभावों से वह तो नित-नित झोली भरता है।

तुमरी महिमा अति महान्, जय हो जय हो

आपके पावन रूप में ही मेरे जीवन का सामान;
आपके सत्य शिव सुन्दर रूप से मिले उच्च जीवन का दान।

आपकी ज्योति अति महान्, जय हो जय हो

आपके दर पर आकर भगवन पाया मैंने जीवन दान;
आपके चरणों में ही जो जाये, मेरे इस जीवन की शाम।

आपकी शक्ति अति महान्, जय हो जय हो

मेरे उपकारी सत्गुरु जी कैसे आपका धन्यवाद करूँ;
नहीं है मेरे पास सामर्थ्य आपकी महिमा गान करूँ।

आपकी महिमा अति महान्, जय हो जय हो

- श्रीमती सुदेश खुराना (लुधियाना)

मानसिक चिन्ता और खेद से ही बड़े-बड़े भयानक
असाध्य रोग हो जाते हैं।

दृष्टि

जीवन जीना एक कला है। हम चाहें तो बहुत सुन्दर जीवन जिया जा सकता है, वर्ना यही जीवन हमें बोझ लगने लगता है। ऐसे में प्रश्न जीवन जीने की सही दृष्टि प्राप्त करने का है, क्योंकि जब तक यह दृष्टि हमें प्राप्त नहीं होती, तब तक हमें जीने की राह नहीं मिल सकती। मनुष्य को सबसे पहले स्वयं से यह प्रश्न करना चाहिए कि वह इस धरती पर क्यों आया? आप यहाँ शिकायत करने, दुःखड़े रोने के लिए आए हैं या फिर आनन्द लेने के लिए आए हैं? इस प्रश्न को आपको जैसा उत्तर मिलेगा, जीवन में आपकी वैसी दृष्टि हो जायेगी। पांडवों और कौरवों को शस्त्र देते हुए आचार्य द्रोण के मन में उनकी वैचारिक और व्यावहारिकता की परीक्षा लेने की बात सूझी। उन्होंने दुर्योधन को अपने पास बुलाया और कहा, “वत्स, तुम समाज में से एक अच्छे आदमी की परख करके उसे मेरे पास उपस्थित करो।” कुछ दिनों बाद दुर्योधन वापस आचार्य के पास आया और कहने लगा, “मैंने कई नगरों, गाँवों का भ्रमण किया, लेकिन मुझे कहीं कोई अच्छा आदमी नहीं मिला।” फिर आचार्य ने युधिष्ठिर को अपने पास बुलाया और कहा, “वत्स, इस पृथ्वी पर से कोई बुरा आदमी तलाश कर ला दो।” काफ़ी दिनों के बाद युधिष्ठिर आचार्य के पास आए। आचार्य ने पूछा, “क्यों, किसी बुरे आदमी को साथ लाए हो?” युधिष्ठिर ने कहा, “गुरु जी, मुझे कोई बुरा आदमी मिला ही नहीं।” सभी शिष्यों ने आचार्य से पूछा, “गुरुवर ऐसा क्यों हुआ कि दुर्योधन को अच्छा आदमी नहीं मिला और युधिष्ठिर को बुरा आदमी नहीं मिला?”

आचार्य बोले, “जो व्यक्ति जैसा होता है, उसे सारे लोग अपने जैसे दिखाई पड़ते हैं। इसलिए दुर्योधन को कोई अच्छा व्यक्ति नहीं मिला और युधिष्ठिर को कोई बुरा आदमी न मिल सका।”

असल में, दो ही प्रकार के मनुष्य होते हैं। एक वे जिनकी दृष्टि संकुचित होती है, जबकि दूसरी वे जिनकी दृष्टि उदार होती है। संकुचित दृष्टि वाले बहुत थोड़ा देख पाते हैं, जबकि उदार दृष्टि वाले वस्तु या व्यक्ति का समग्रता से निरीक्षण करते हैं। यही वजह है कि दृष्टिहीन धृतराष्ट्र का पूरा जीवन अपने परिवार के माया-मोह में सिमट गया, दूसरी तरफ सूरदास ने दृष्टिहीन होने के बावजूद अपने जीवन को आदर्श बनाया। जहाँ विस्तार है, वहाँ जीवन है। जहाँ मतभेद है वहीं मृत्यु भी है। सभी प्रकार के प्रेम विस्तार को और सभी तरह के स्वार्थ मतभेदों को जन्म देते हैं। इस प्रकार प्रेम ही जीवन का एकमात्र नियम है।

चरित्र की सम्पत्ति दुनिया की तमाम दौलतों से बढ़कर है।

तैरिये यही जीवन है.....

एक दिन एक लड़का समुद्र के किनारे बैठा हुआ था। उसे दूर कहीं एक जहाज लंगर डाले खड़ा दिखाई दिया। वह जहाज तक तैर कर जाने के लिए मचल उठा। तैरना तो जानता ही था, कूद पड़ा समुद्र में और जहाज तक जा पहुँचा। उसने जहाज के कई चक्कर लगाए। विजय की खुशी और सफलता से उसका आत्मविश्वास और बढ़ गया लेकिन जैसे ही उसने वापस लौटने के लिए किनारे की तरफ़ रूख किया, तो उसे निराशा होने लगी। उसे लगा कि किनारा बहुत दूर है। वह सोचने लगा, वहाँ तक कैसे पहुँचेगा? हाल में मिली सफलता के बाद अब निराशा ऐसी बढ़ रही थी कि स्वयं पर आत्मविश्वास न हो रहा था। जैसे-जैसे उसके मन में ऐसे विचार आते रहे, उसका शरीर शिथिल होने लगा। फुर्तीला होने के बावजूद बिना डूबे ही वह डूबता सा महसूस करने लगा।

लेकिन जैसे ही उसने संयत होकर अपने विचारों को निराशा से आशा की तरफ़ मोड़ा, क्षण भर में ही जैसे कोई चमत्कार होने लगा। उसे अपने भीतर त्वरित परिवर्तन अनुभव होने लगा। शरीर में एक नई ऊर्जा का संचार हो गया। वह तैरते हुए सोच रहा था कि किनारे तक न पहुँच पाने का मतलब है, मर जाना और किनारे तक पहुँचने का प्रयास है, डूब कर मरने से पहले का संघर्ष। इस सोच से जैसे उसे कोई संजीवनी ही मिल गई। उसने सोचा कि जब डूबना ही है, तो फिर सफलता के लिए संघर्ष क्यों न किया जाए। उसके भीतर के भय का स्थान विश्वास ने ले लिया। इसी संकल्प के साथ वह तैरते हुए किनारे तक पहुँचने में सफल हो गया। इस घटना ने उसे जीवन की राह में आगे चलकर भी बहुत प्रेरित किया। यही लड़का आगे चलकर विख्यात ब्रिटिश लेखक मार्क रदरफोर्ड के नाम से जाना गया।

बेईमानी ग़रीबी का इलाज नहीं है, उल्टे वह ग़रीबी बढ़ाने वाली चीज़ है, गौरव नष्ट करने वाली चीज़ है, सुविधाओं से वंचित रखने वाली और दूसरे ग़रीबों से सुरक्षित रहने के लिए अपनी चिन्तायें भी बढ़ाने वाली है।

हमारी चिन्ताएं हमारी कमज़ोरियों के कारण होती हैं।

यूँ निखारे त्वचा और बाल

जब भी प्राकृतिक माइश्चराइजर्स की बात आती है, तो कई लोग चिन्ता में पड़ जाते हैं। यहाँ कुछ जादुई प्राकृतिक रेसपीज आपके लिए प्रस्तुत हैं, जो बहुत ही कम समय में आपकी त्वचा तथा बालों में तबदीली लायेंगी। आप इन्हें ताज़ा-ताज़ा भी इस्तेमाल कर सकती हैं या दो दिन तक इन्हें रेफ्रीजरेटर में स्टोर कर सकती हैं। यह प्राकृतिक माइश्चराइजर्स आपकी त्वचा की चमक वापस लाते हैं तथा आपके बालों को पोषण देते हैं।

त्वचा के लिए माइश्चराइजर्स एक चम्मच शहद में एक केला मैश करके अपनी त्वचा पर 10 मिनट के लिए लगायें। सूर्य की रोशनी से ख़राब हुई शुष्क त्वचा के लिए गिलसरीन, शहद तथा जैतून के तेल के दो चम्मच बहुत लाभदायक रहते हैं। एक चम्मच ताजा क्रीम के साथ बादाम के तेल की मालिश मृत व शुष्क त्वचा को सुकोमल बनाती है।

सर्द मौसम में त्वचा समस्याओं के लिए शहद मिश्रित पपीता, एक चम्मच चिरौंजी एक शानदार ड्राई स्किन मास्क का काम करता है। एक चम्मच ताजा क्रीम एक चम्मच वालनट्स तथा पिसे बादामों के एक चम्मच का मिश्रण सर्दियों में त्वचा के लिए दागों की समस्या का मुकाबला करने हेतु बेहतर रहता है। एक विटामिन-ई का कैप्सूल एक मैश किए हुए केले के साथ मिश्रित करें तथा त्वचा की मालिश करें। शहद मिलाकर इसे चेहरे पर एक मास्क की तरह लगाएं। यह पपड़ीनुमा तथा शुष्क त्वचा के लिए बहुत लाभदायक है।

एक चम्मच बादाम तेल के साथ, एक चम्मच शहद, दूध तथा मूंगफली का पाउडर मिक्स करें तथा इससे त्वचा को हल्का सा रगड़ें।

हेयर माइश्चराइजर्स-

पाँच बड़े चम्मच शहद लेकर तेल लगे बालों में इससे मालिश करें, बीस मिनट के बाद शैम्पू कर लें। एक लीटर पानी में दो चम्मच शहद मिलाकर इसे लीव इन कंडीशनर की तरह इस्तेमाल करें।

दूध, आधा कप ताजा गुलाब का पेस्ट तथा एक कप जावाकुमुम के पत्तों का पेस्ट लें तथा सिर की त्वचा व बालों में इससे मालिश करें। गर्म पानी से धोकर हल्का सा शैम्पू कर लें।

चार बड़े चम्मच नारियल का तेल, दो बड़े चम्मच गिलसरीन तथा दो बड़े चम्मच नीम का पेस्ट लेकर सिर की शुष्क त्वचा में मालिश करें, ताकि बैक्टीरिया, फंगल

दरिद्रता से अधिक बुरा हमारा दरिद्रता पूर्ण विचार है, क्योंकि वह चारों तरफ एक कुत्सित वातावरण की सृष्टि करता है।

इफैक्शन या खारिश की समस्या से बचा जा सके। आंवला, रीठा तथा शिकाकाई पाउडर प्रत्येक के दो बड़े चम्मच तथा बालों की डीप कंडीशनिंग के लिए एक हेयर मास्क की तरह लगाएं। गुंथे हुए पपीते, केले तथा सेब (प्रत्येक के तीन चम्मच) लेकर चटनी बनाकर मास्क की तरह लगाएं। यह बालों को कंडीशन करता है।

थकान दूर करने के उपाय

अधिक परिश्रम करने से शरीर में थकान आ जाती है, शरीर सुस्त हो जाता है। फिर कुछ काम करने का मन नहीं करता, सिर्फ आराम की ज़रूरत महसूस होती है। थकान दूर करने के लिए आप निम्न प्रयास करें -

- ❖ अपनी दो अंगुलियों के पोरों से चेहरे की हल्की मालिश करें। इससे ब्लड सर्कुलेशन बढ़ेगा, जिससे आप महसूस करेंगे कि आपकी थकान रफूचक्कर हो गई है।
- ❖ नाक के दोनों ओर हल्की मालिश करते हुए धीरे-धीरे दोनों आँखों के बीच वाले भाग से लेकर आँखों के नीचे भी हल्की मालिश करें फिर इसी तरह से भौहों तक पहुँचें।
- ❖ भौहों पर हल्का दबाव डालते हुए अन्दर से बाहर की ओर मालिश करें।
- ❖ अब आँखों के बाहरी किनारों पर मालिश करते हुए ललाट तक पहुँचें।
- ❖ इसके बाद आँखों के एकदम नीचे की ओर आएं। गालों के बीच हल्की मालिश करते हुए फिर ऊपर से ही मसूड़ों की भी मालिश करें। इसके बाद जबड़ों को अँगुलियों की पकड़ में लें और जबड़ों के किनारों पर हल्का दबाव डालें।
- ❖ कई बार सुगन्धित तेल के प्रयोग से भी शरीर की थकावट को भगाया जा सकता है। सुगन्धित तेल से प्रभावित अंग की हल्की मालिश करने से ताजगी महसूस होती है, इसके लिए सुगन्धित तेल की कुछ बूँदें वनस्पति तेल में मिलाकर मालिश करनी चाहिए।

जिस कार्य या समस्या का हल आपके वश में न हो, तो उसे समय की धारा पर छोड़ देना ही बेहतर है।

दूसरों से अनावश्यक झूठी आशाएं लगाने वाला अन्त में निराश हो संसार की कठोरता का अनुभव करता है।

Success not by Cheating

Success is generally thought to mean having wealth and fame.

All of us would want to be successful in life. Students, professionals - doctors, engineers, lawyers or businessmen, etc. etc. would all want to be successful in their professions. A thief or a criminal too would want to be successful in his profession of committing theft or crime. Yet the successful thief won't get sanction or approval from anybody, being against rules of a civilized society. In the same way, a doctor or an engineer who achieves success, in getting rich, by fraudulent means won't earn recognition or appreciation of the people while his counterpart who succeeds in his profession and gets rich on strength of his competency and honesty would be respected and honored by everybody. The success of the later is acceptable while that of the former is un-acceptable.

A sportsman who works hard with dedication and discipline and wins in competitions achieves success which is glorious but the one who indulges in doping or fixing, though may win, but his victory will be inglorious for it will ultimately bring shame to him and he will fall from grace.

One may measure success in terms of money, power, position, name and fame acquired. The world will, however, forget those who have not utilized these for the good of mankind and remember only those who have done well. Success may thus be noble or ignoble. Success by Er. E. Sreedharan who built the Delhi Metro, is noble in nature while the success by share broker Harshad Mehta, a swindler, is ignoble.

In a survey conducted by H.T. amongst school students 70% of the respondents said that they won't mind cheating in order to achieve success, unmindful of the fact that such a

Remember, you may choose your sin, but you cannot
choose the consequences.

- Jenny Sanford

success will be transitory in nature and sure to bring shame in the long run. The fall from the highest pedestal of success and fame by Rajat Gupta, a corporate leader, philanthropist and educationist, charged of insider trading and Lance Armstrong the famed Cyclist and seven times Tour-De-France winner, charged of doping should be an eye-opener.

Therefore, work to achieve success which is by honest means and not by dishonest means and is noble in cause and not for self satisfaction or aggrandizement.

We should be men with values - rather than be merely successful - Albert Einstein.

- Prof. P.V.Gupta

- ❖ Educationists should build the capacities of the spirit of inquiry, creativity, entrepreneurial and moral leadership among students and become their role model.
- ❖ Thousands of candles can be lighted from a single candle, and the life of the candle will not be shortened. Happiness never decreases by being shared.
- ❖ It is better to keep your mouth closed and let people think you are a fool than to open it and remove all doubt.
- ❖ Fight with your strength, not with other's weakness because, true success lies in your effort, not in other's defeat.
- ❖ Kind words can be short and easy to speak, but their echoes are truly endless.

Kindness is the language which the deaf can hear
and the blind can see.

- Mark Twain

आत्मबल विकास महाशिविर- 2016

परम पूजनीय भगवान् देवात्मा का 166 वाँ शुभजन्म महोत्सव उन्हीं के सूक्ष्म संरक्षण में 18-21 दिसम्बर, 2016 तक आत्मबल विकास महाशिविर के रूप में ऐतिहासिक नगर देवधाम रुड़की में बड़ी धूमधाम व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। शिविर का सारा वातावरण देवप्रभावों से सराबोर रहा, जिसकी एक संक्षिप्त झाँकी इस प्रकार है-

तैयारियाँ : महाशिविर की तैयारियों हेतु श्रीमान् आर. एस. सिंघल जी 14 दिसम्बर को श्री यशपाल सिंघल जी सपरिवार व अशोक खुराना जी 16 दिसम्बर को ही पधार गए थे। कुछ धर्मसाथी अन्य कई स्थानों से 17 दिसम्बर को आ गए थे। इस प्रकार धर्मसाथी आते गए और सेवाओं का सिलसिला आगे बढ़ता रहा। नवम्बर व दिसम्बर के पत्रिका के अंकों में शिविर का पूरा कार्यक्रम छपवाया गया। निमन्त्रण कार्ड छपवाकर बाहर के स्थानों को डाक से भेजे गए तथा स्थानीय व निकट के स्थानों पर हाथ से भी बाँटे गए। टेलीफोन द्वारा भी लोगों को सूचित किया गया। धर्मशालाओं, गेस्ट हाऊसों तथा होटलों की बुकिंग की गई। मिशन की गतिविधियों के बड़े-बड़े डिस्पले बोर्ड तैयार किए गए। देवाश्रम में चल रहे निर्माण कार्य को बड़ी मुस्तेदी से आगे बढ़ाया गया।

शिविर स्थल : महाशिविर का मुख्य आयोजन श्री हरमिलाप भवन, साकेत, रुड़की में रखा गया। साधन स्थल को सुन्दर रूप में सजाया गया। ठहरने की व्यवस्था श्री हरमिलाप भवन, पंचायती धर्मशाला, देवाश्रम के हॉल, गेस्ट हाऊस आदि में की गई। नाश्ते व भोजन की पूरी व्यवस्था श्री हरमिलाप भवन में ही रही।

आगमन: इस अवसर पर पधारे शिविरार्थियों के स्थानों की सूची व संख्या इस प्रकार है- पंजाब: संगरूर (4), चौंदा (2), बंगा (1), लुधियाना (3), कपूरथला (7), सुनाम (1), बठिण्डा (2), कल्याण-मलके (1), मोगा (5), पठानकोट (1); हरियाणा: यमुनानगर (2), जगाधरी (1), शादीपुर (1), अम्बाला शहर (12), शहजादपुर (1), नारायणगढ़ (2), पेहोवा (2), पंचकूला (3), दुखेड़ी (2), फरीदाबाद (4), गुड़गाँव (6), हिसार (1), बल्लभगढ़ (2), भूना (1), करनाल (2), सिरसा (3), पानीपत (1); उत्तर प्रदेश: सहारनपुर (31), जाटोंवाला (1), बेहट (12), कुआँखेड़ा (3), भायलाखुर्द (6), रणखण्डी (3), छुटमलपुर (3), शामली (1), साहिबाबाद (1), मुजफ्फरनगर (12), शाहपुर (1), पमनावली (3), तिसंग क्षेत्र (35), वेहलना

उनका जीवन सफल है जो खुद कष्ट झेलते हैं, दूसरों की जरूरतें
अपने से पहले पूरा करने का प्रयास करते हैं।

फोटो महाशिविर 2016

फोटो महाशिविर 2016

फोटो महाशिविर 2016

फोटो महाशिविर 2016

(3), अभयपुर (4), नया मीरापुर (2), नावला (3), मीरापुर (2), शेरपुर (1), मेरठ (2), लखनऊ (1), कानपुर (2), बुलन्दशहर (1), ग़ज़ियाबाद (5); दिल्ली (5); बंगाल: कोलकाता (1), तमिलनाडू: विल्लौर (1); चण्डीगढ़ (3); हिमाचल प्रदेश: लांझनी (4), योलकैंट (1), भाली (2), सोलन (3), नलेरा (2), बेदी-गगल (5), झिक्कड़ (2); महाराष्ट्र: मुम्बई (3); गुजरात : सूरत (1); मध्यप्रदेश : भोपाल (6), ग्वालियर (1); शहडोल (1); असम : गुवाहाटी (2); उत्तराखण्ड : विकासनगर (4), हरिद्वार (8), देहरादून (1), काशीपुर (1), करोंदी (1); राजस्थान : पदमपुर (17), पदमपुरग्राम (3), श्रीगंगानगर (1); छत्तीसगढ़ : बिलासपुर (1)

इस प्रकार देश के 14 राज्यों के 67 स्थानों से 290 के लगभग लोगों ने इस महायज्ञ में भाग लिया। प्रायः 110 जन रुड़की नगर से साधनों में हिस्सा लेते रहे। कुल लगभग 400 जनों ने शिविर से लाभ उठाया। कड़ाके की ठण्ड के बावजूद इतनी दूर-दूर से धर्मसाथी पधारे, जोकि उत्साहजनक दृश्य था।

शिविर की गतिविधियाँ एवं सेवाकार्य

- ❖ मुख्य साधनों के भिन्न प्रातःकालीन निज का साधन, योगासन व प्राणायाम की कक्षाएँ भी समयानुसार चलती रहीं।
- ❖ विश्वास चिकित्सा सत्र में श्रीमान् कंवरपाल सिंह जी, श्रीमती नैना जी, डॉ. सोनिया कृपलानी जी, श्रीमान् मनोहर जी व अन्य धर्मसाथी सहयोगी होते रहे।
- ❖ भजनों के गान में श्री विनोद गर्ग जी, श्रीमान् चन्द्रगुप्त जी, श्री सोतम कुमार जी, श्री रामवीर सिंह जी, श्रीमती मनीषा सिंघल जी, डॉ. सीमा शर्मा जी, वीरेन्द्र डोगरा जी व अन्य कई धर्मसम्बन्धी सहायक होते रहे।
- ❖ किरयाना, दूध व खाने का सारा सामान श्री अंकुर जैन व श्री रामनाथ बत्रा जी लाते रहे।
- ❖ एक्यूप्रैशर व होम्योपैथी चिकित्सा में श्री आर. के. गोयल व डॉ. सोनिया जी अपनी सेवाएँ प्रदान करते रहे।
- ❖ टैंट व्यवस्था व धर्मशालाओं की देखभाल श्री अंकुर जैन जी व श्री सौरव कुमार जी, आनन्द टैंट हाऊस के सहयोग से बड़ी मुस्तैदी से सम्भालते रहे।
- ❖ सब्जी लाने का कार्य श्री अशोक वाधवा जी ने पूरी निष्ठा से निभाया।
- ❖ खाने की व्यवस्था श्रीमती पूनम जैन, श्री रेवती शरण सिंघल व श्री रामराज जी

अपने निरीक्षण के बिना निर्दोषिता की उपलब्धि सम्भव नहीं है।

की टीम ने अन्य धर्मसम्बन्धियों के सहयोग से कुशलतापूर्वक सम्भाली।

- ❖ पानी की व्यवस्था श्री बी. के. गुप्ता जी ने पूरी लगन से की। बिना मशाले का स्वादिष्ट गुड़ इस बार भी उन्होंने उपलब्ध कराया।
- ❖ विशुद्ध सेवा कार्यों के अन्तर्गत श्री सुभाष जैन जी अन्य धर्म सम्बन्धियों के सहयोग से 19 दिसम्बर को गोशाला व 20 दिसम्बर को कुष्ठाश्रम जाकर सेवाकारी बने।
- ❖ कार्यालय का कार्य श्री संजय धीमान, श्री जे.पी. गोयल, श्री सतीश मेहता, श्री शिवम कुमार व गौरव कुमार ने बड़ी लगन व कुशलता से निभाया।
- ❖ साधन हाल की सजावट, बैनर लगाने व बुक स्टाल को सम्भालने में श्री मोहन सिंह अधिकारी, श्री डी. के. कपिल, श्री एस. एम. मिश्रा, ज्ञानी हरीशचन्द्र जी, श्री राजेश रमानी जी व अन्य कई धर्मसम्बन्धी सहयोगी होते रहे।
- ❖ श्री आदेश सैनी जी, श्री सुशील कुमार जी तथा श्री रवीन्द्र कुमार देवाश्रम के रख-रखाव व अन्य अनेक कार्यों को भाग-भाग कर करते रहे। गैस सिलेण्डरों की व्यवस्था श्री आदेश सैनी जी ने पूरी लगन से की।
- ❖ साउण्ड सिस्टम श्री प्रदीप सिंह जी ने पूरी तन्मयता से संभाला।
- ❖ ट्रांसपोटेशन का पूरा कार्य श्री विनीत अरोड़ा जी बखूबी निभाते रहे।
- ❖ फूलों की सेवा व सजावट व स्टेज को भव्य रूप देने का कार्य श्री मेहरा जी व श्री सोनू जी ने अपनी टीम के साथ आनन्द टैण्ट हाऊस की ओर से कुशलतापूर्वक किया।

महाशिविर का पहला दिन (18 दिसम्बर, 2016)

प्रातः 10:00 बजे: 'अर्थपूर्ण लक्ष्य कैसे पायें?' विषय पर एक वीडियो वर्कशॉप का आयोजन किया गया। वर्कशॉप का संचालन श्री राजेश रमानी जी ने किया। इस वर्कशॉप में डॉ. नवनीत अरोड़ा जी ने बताया कि लक्ष्य बनाना क्यों जरूरी है? इसे कैसे प्राप्त किया जाए? लक्ष्य अर्थपूर्ण कैसे बने?

दोपहर 3:00 बजे: 'अर्थपूर्ण सफलता कैसे पायें?' विषय पर वीडियो वर्कशॉप में डॉ. नवनीत अरोड़ा जी ने जीवन में सफलता पाने के व्यावहारिक सूत्र बताए। इस वर्कशॉप का संचालन श्री राजेश रमानी व बहन अनिता सैनी जी ने मिलकर किया।

सुव्यवस्थित जीवन के लिए अपने जीवनक्रम पर बारीकियों से विचार करते रहना मनुष्य की समझदारी का काम है।

सायं 5:00 बजे: परम पूजनीय भगवान् देवात्मा की छवि पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वलन के बाद 'हमारे पूजनीय सतगुरु जी तुम हो धन्य' भजन के गान के साथ इस साधना सत्र का शुभारम्भ हुआ। साधना के विषय 'मृत्यु से जीवन की ओर' पर बोलते हुए बहन अनिता सैनी जी ने बताया कि बुरे भाव, जैसे- अहंकार, घृणा, क्रोध, कृतघ्नता, जलन आदि आत्मा को बीमार बनाते हैं और यदि इनका अधिपत्य बढ़ता जाये, तो आत्मा मृत्यु की ओर बढ़ती जाती है। ऐसी अवस्था में यदि देवात्मा के देवप्रभाव मिल जाएं, तो इन बुरे भावों से बचा जा सकता है। आत्मा एक बार फिर मृत्यु से जीवन की ओर जाने लगती है। उन्होंने डॉ. हरनाम सिंह, श्रीमान् नौध सिंह, श्रीमती शोभा देवी जी आदि के जीवनो में आए परिवर्तनों का उदाहरण देकर बताया कि जिस प्रकार उन्होंने अपने जीवन को मृत्यु के पंजे से बचाकर एक नया जीवन प्राप्त किया, उसी प्रकार हमें भी बचना है। इस सत्र में दो समाजसेवी उपस्थित रहे- (1) अर्थ सेवियर फाउन्डेशन, गुड़गाँव के संस्थापक श्री रविकालरा जी (2) दृष्टिहीन व मानसिक रूप से कमजोर लोगों की सेवा में रत जोधपुर के श्री प्रमोद गुप्ता जी। इस सत्र के संचालक श्री वी. के. अग्रवाल जी ने शिविर के बारे में आवश्यक सूचनाएँ बताई तथा डॉ नवनीत जी ने सभी का आभार व्यक्त किया।

इसके उपरान्त नई पुस्तकों का विमोचन किया गया। आज के मुख्य अतिथि श्री रवि कालरा (नई दिल्ली) जी ने 'नई सोच नया सवेरा' भाग प्रथम का विमोचन किया। 'नई सोच नया सवेरा' भाग द्वितीय का विमोचन श्री वी. पी. सैनी (सोलन) ने किया। श्रीमान् सुनील टहलरामानी एवं पत्नी महक टहलरामानी ने नई पुस्तक 'आत्मा की खुराक' का विमोचन किया एवं नयी पॉकेट पुस्तक 'हे धन'! का विमोचन श्रीमान् विवेक अग्रवाल जी, गुड़गाँव द्वारा किया गया। टाइम टेबल डायरी का विमोचन श्रीमान् यशपाल सिंघल जी, फरीदाबाद ने किया।

रेणु सिंघल (फरीदाबाद), अनीता रोचलानी (भोपाल), डॉ. अदिति अग्रवाल जी, गुड़गाँव, अर्चना प्रभाकर (पंचकुला) ने इन पुस्तकों को भगवन् के श्री चरणों में जाकर उपहार स्वरूप भेंट रखा।

रात्रि 8:30 बजे: भजन संध्या का आयोजन किया गया। इस सत्र में श्री रवि कालरा जी ने अपनी संस्था 'अर्थ सेवियर फाउन्डेशन' द्वारा बेसहारा लोगों के लिए किए जा रहे सेवा कार्यों के बारे में जानकारी भी दी, जिसको सुनकर सभी हृदय उनके प्रति श्रद्धा से झुक गए।

वह जो ग़लती करता है वह मनुष्य है, जिसे उस पर दुःख है वह सन्त है,
जिसे घमण्ड है वह शैतान है।

महाशिविर का दूसरा दिन (19 दिसम्बर, 2016)

प्रातः 9:00 बजे: पूजनीय भगवान् की छवि के माल्यार्पण तथा दीप प्रज्जवलन के बाद श्रीमान् चन्द्रगुप्त जी ने 'पाऊँ में धर्म का जीवन' पद वाले भजन का गान किया। इसके बाद साधना के विषय 'धर्मों के समक्ष चुनौतियाँ' पर बोलते हुए श्रीमान् प्रेम रोचलानी जी ने बताया कि धर्मों के समक्ष चुनौतियाँ जानने से पहले हमें यह जानना होगा कि धर्म है क्या? क्या पूजा-पाठ, देवी-देवताओं की मूर्तियों के आगे दीपक जलाना, जल चढ़ाना, उपवास रखना, तीर्थ यात्रा करना आदि क्रियाएँ ही धर्म हैं? यदि ये क्रियाएँ धर्म होतीं, तो इनके करने से मनुष्य के जीवन में, समाज में कुछ बेहतरी आनी चाहिए परन्तु हम देखते हैं कि ऐसा कुछ नहीं हो रहा। ये क्रियाएँ धर्म का कर्मकाण्ड तो हो सकती हैं परन्तु धर्म नहीं। जो काम हमें सौंपा गया है, यदि हम उसको पूरी निष्ठा और ईमानदारी से करते हैं, तो यह धर्म की गति कहलाएगी। भगवान् देवात्मा ने चार जगत् बताए हैं- भौतिक, वनस्पति, पशु और मनुष्य। यदि हम इन जगत् की गतिविधियों पर नज़र डालें, तो इनमें से पहले तीन जगत् भौतिक, वनस्पति व पशु तो अपने धर्म के अनुसार पूरी निष्ठा से कार्य करते हैं, जैसे-सूर्य निरन्तर प्रकाश और गर्मी देने का कार्य करता है, वनस्पतियाँ छाया, फल, लकड़ी आदि देकर अपने धर्म को निभाती हैं, पशु-पक्षी भी अपने कर्तव्य कर्मों से पीछे नहीं हटते। मनुष्य जगत्, जो संसार की सबसे उन्नत प्रजाति है, ने अलग-अलग परिस्थितियों के अनुसार धर्म को भी अपने-अपने तरीके से परिभाषित किया है। उसने प्रकृति की शक्तियों, यथा- सूर्य, चन्द्रमा, हवा, पानी, अग्नि आदि को देवी-देवता की संज्ञा देकर इनकी पूजा आरम्भ कर दी और यहीं से धर्म की शुरुआत हुई। परन्तु इससे मनुष्य का कुछ भला नहीं हुआ।

धर्मों के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ हैं-

प्रकृति के सम्बन्ध में विज्ञान सम्मत ज्ञान दें। उसके नियमों, कार्यप्रणाली से अवगत करायें।

आत्मा का विज्ञान सम्मत ज्ञान दें।

मृत्यु उपरान्त परलोक सम्बन्धी सत्य ज्ञान दें।

भगवान् देवात्मा ने इन चुनौतियों को स्वीकार किया और विज्ञान के आधार पर तथा प्रकृति की सत्य घटनाओं पर धर्म की बुनियाद रखी। उन्होंने बताया कि जिस प्रकार परिवर्तन प्रकृति का अटल नियम है, उसी प्रकार धर्म के क्षेत्र में भी समय-समय पर आवश्यकतानुसार परिवर्तन होना चाहिए। चारों जगत् से हमारे सम्बन्ध बेहतर

सावधानी रखो, जागृत रहो और प्रार्थना करो।

क्योंकि क्या पता कब जाना पड़ जाये।

होंगे, तभी हमारे जीवनो में खुशहाली और शान्ति आयेगी। हमारा जीवन उच्च बनेगा और हम जीवन में आने वाली चुनौतियों का सामना कर सकेंगे।

प्रातः 10:45 बजे: विश्वास चिकित्सा सत्र में श्रीमान् कंवरपाल सिंह जी सहयोगी बने। कुछ धर्मसम्बन्धी श्री सुभाष जैन जी के नेतृत्व में स्थानीय गौशाला गए। वहाँ पर गायों के लिए शुभकामना की गई और उन्हें चारा खिलाया।

प्रातः 11:30 बजे: 'अर्थपूर्ण सम्बन्ध कैसे बनाएं'? विषय पर वीडियो वर्कशॉप का आयोजन किया गया। सुश्री अनिता सैनी जी ने मंच संचालन किया।

सायं 3:00 बजे: भक्ति संगीत का आयोजन सिविल लाइन्स स्थित 'देवाश्रम' में किया गया। डॉ. नवनीत जी ने रुड़की में भगवान् के कार्य का संक्षिप्त इतिहास बताया। तत्पश्चात् श्रीमान् चन्द्रगुप्त जी, श्री विनोद जी व अन्य धर्म सम्बन्धियों ने बहुत सुन्दर भजनों का गान किया। 'देवाश्रम' में चल रहे निर्माण कार्यों को देखकर सभी ने अपनी खुशी का प्रकाश किया।

सायं 5:00 बजे: 'तुम हो सरताज सृष्टि के निराले भगवन' भजन का गान श्रीमान् चन्द्रगुप्त जी ने किया और 'पाया जीवन में सच्चा सहारा, जब से थामा है दामन तुम्हारा' भजन का गान श्री विनोद जी ने किया। दोनों भजनों से जो वातावरण बना उसको उपस्थित जन ही महसूस कर सकते हैं। इसके बाद सत्र के संचालक श्रीमान् अशोक रोचलानी जी ने साधना के विषय 'जीने की कला' पर अपने विचार रखने के लिए डॉ. नवनीत अरोड़ा जी को आमंत्रित किया।

डॉ. नवनीत अरोड़ा जी ने बताया कि जीने की कला सीखनी है, तो हमें अपने स्वभाव को बदलना होगा अर्थात् नकारात्मक विचारों को मन से पूरी तरह निकाल कर सदैव सकारात्मक विचारों में रहना होगा। उन्होंने आगे बताया कि सदैव दूसरों के गुण और उनसे पाए उपकारों को देखना होगा। जब किसी की बुराई दिखाई दे, तो उससे पहले उसके कम से कम दो गुण अवश्य देखें, फिर स्वयं अपनी सोच में आए बदलाव को देखें।

'जीने की कला' सीखने के लिए जहाँ भी जाएं या जो भी काम करें उसके बारे में हमेशा सकारात्मक ही सोचें, जैसे - 'मैं शिविर में स्वस्थ रहूँगा', 'मेरी यात्रा ठीक से गुजरेगी', 'शिविर से अच्छी बातें सीखकर आऊँगा', 'जहाँ जा रहा हूँ, वहाँ मेरा काम अवश्य होगा'। ऐसे भाव रखेंगे, तो मन उत्साह से भरा रहेगा और हम कोई भी काम

करो और भूल जाओ। अगर तुम्हें किसी को क्षमा करना है,
तो जल्दी से क्षमा कर दो।

व्यवस्थित ढंग से पूरा कर सकेंगे।

हमें हमेशा याद रखना होगा- 'हम कितने सौभाग्यशाली हैं कि हमें देवात्मा जैसे गुरु मिले', 'हम अपने माता-पिता व अन्य पूर्वजों को धन्यवाद देते हैं कि हमें देवात्मा के दर का पता चला', 'खुशी की बात है कि हम सत्संग में आ पाए', 'सभी सम्बन्धियों व मित्रों को धन्यवाद देते हैं क्योंकि हर सुख-दुःख के समय में वे हमारे साथ रहे', 'किसान, मज़दूर, डॉक्टर, दुकानदार, अध्यापक, सैनिक आदि सब मेरे उपकारी हैं क्योंकि मैं उनसे निरन्तर सेवाएं पाता रहा हूँ।' बस सकारात्मकता से भरे रहकर जीना ही जीने की सच्ची कला है।

अन्त में श्रीमान् अशोक जी ने सभी का धन्यवाद किया, अपने विचार भी रखे और शुभकामना गीत का सामूहिक गान करवाया।

रात्री 8:30 बजे: शिविरार्थियों का परिचय कराया गया व मिशन की सदस्यता हेतु कु. तरु सिंघल द्वारा प्रेरित किया गया। मंच का संचालन डॉ. अदिति अग्रवाल जी ने किया।

महाशिविर का विशेष दिन (20 दिसम्बर, 2016)

आखिर वह शुभ घड़ी आ गई, जिसका हम सभी को पूरे वर्ष इन्तज़ार रहता है। परम पूजनीय भगवान् देवात्मा के 166 वें शुभ जन्मदिन की परम पुनीत वेला। सभी धर्मसाथी प्रातः जल्दी उठकर, नहा धोकर तैयार हो गए व धर्मशाला के प्रांगण में बनाए गए विशेष मंच के सामने एकत्रित होने लगे और ठीक प्रातः 6:00 बजे भजनों का गान प्रारम्भ हो गया। सभी ने अपने हाथों में गुलाब के फूल भगवन् की छवि के अर्चन हेतु ले रखे थे और एक दूसरे को गले मिलकर 'बधाई हो!' 'बधाई हो!' कह रहे थे। सूर्योदय के समय घंटा और शंख बजाकर भगवन् के जन्म की वेला की शुभ सूचना दी गई। 'भगवान् देवात्मा की जय' के उद्घोष से आसमान गूँज उठा। 'प्रगटे देवगुरु भगवान्' पद वाले भजन का गान किया गया। फिर श्रीमान् अशोक रोचलानी जी ने मंच पर खड़े होकर आज के दिन की विशेषता बताई व सभी को भगवान् के जन्मदिन की बधाई व शुभकामनाएँ दी। 15 मिनट के इस हृदयस्पर्शी बयान के दौरान उनके नेत्रों से खुशी के आँसू बह रहे थे और गला बार-बार अवरुद्ध हो रहा था।

इसके बाद सभी ने कतारबद्ध होकर परम पूजनीय भगवन् की छवि के सामने पुष्पांजलि अर्पित की और सूक्ष्म सत्ता के सामने नतमस्तक होते रहे। कुछ धर्मसाथी 'शुभ हो देवात्मा, शुभ हो' की मंगलध्वनि कर रहे थे तथा कुछ 'बधाई हो-बधाई हो'

जो कुदुरत से जुड़ता है, वह लम्बी उम्र पाता है।

कहकर आने वालों का स्वागत कर रहे थे। कितने ही धर्मसाथी भगवन् की छवि के सम्मुख साष्टांग लेटकर प्रणाम का साधन कर रहे थे और कितने ही ध्यानावस्था में बैठकर भगवान् से उनका देवबल माँग रहे थे। इस अवसर पर परलोकवासी धर्मसाथी श्रीमान् अरुण कुमार जी जैन के सरिवार ने पंचमेवा का प्रसाद उनकी स्मृति में सभी में वितरित किया।

प्रातः 9:00 बजे: भगवन् की छवि के अर्चन, दीप प्रज्ज्वलन व देवस्तोत्र के गान व उसके भावार्थ के बाद साधना के विशेष विषय 'देवात्मा कौन हैं'? पर बोलते हुए श्रीमान् नवनीत अरोड़ा जी ने बताया कि इस संसार में कोई ऐसा व्यक्ति अभी तक पैदा नहीं हुआ जो देवात्मा को पूर्णरूप से पहचान सके, यह बता सके कि देवात्मा कौन हैं। देवात्मा को स्वयं अपने व्याख्या बतानी पड़ी व आत्मकथा लिखनी पड़ी। कोई दूसरा यह कार्य कर नहीं सकता। देवात्मा को किसी अंश में पहचानने का प्रकृति में एक नियम है। वह नियम है उनकी 'देवज्योति' का दान पाना। जिस किसी जन को जितने अंश यह ज्योति मिली है, वह उतने ही अंश उनको समझ पाया है और उनके देवबल को पाकर उतने ही अंश उसका जीवन बदल गया है।

उन्होंने आगे बताया कि देवात्मा को पाने के रास्ते में सबसे बड़ी बाधा 'अहंकार' है। यदि देवात्मा को पाना है तो इस अहंकार को विस्तार देना होगा। जिन-जिन से जो-जो पाया है उन्हें उनका श्रेय देते चलो। तो अहंकार Dilute हो जाएगा। हमें समझना होगा कि मेरा यह जो वजूद है, वह 254 पूर्वजों की बंदौलत है। मेरी सब योग्यताएं वंशानुगत रूप में इन्हीं की देन है तथा शेष भूमिका इन योग्यताओं को उन्नत करने में समाज की है। यह समझ आते ही अहंकार स्वयं समाप्त हो जायेगा।

देवात्मा ने प्रत्येक अस्तित्व का सदैव उचित सम्मान किया। माता-पिता, गुरु, माली, पौधों, पशुओं सभी को सम्मान दिया। परन्तु मानव समाज ने उन्हें क्या दिया? केवल विरोध, गालियाँ, गोलियाँ, मुकदमें। उनको शैतान तक कहा। जो जन, जो संस्थाएं देवात्मा के जीवनव्रत- 'सत्य शिव सुन्दर ही मेरा परम् लक्ष्य होवे, जग के उपकार ही में जीवन यह जावे' में जितने अंश सहायक होंगे, वे उतने ही अंश विकास लाभ करेंगे और जो इसका विरोध करेंगे, वे विनाश के पथ की ओर बढ़ेंगे।

इस सत्र में चण्डीगढ़ से समाजसेवी सुश्री अमरजीत कौर और पदमपुर से 'प्रभ आसरा' के सरदार हरिसिंह जी उपस्थित रहे। साधन के उपरान्त बहन अनिता सैनी जी

जिसकी सेहत अच्छी है, वह ही असली धनवान है।

ने समयदान की अपील की तो कितने ही जनों ने मिशन की गतिविधियों में सहयोग देने हेतु समय देने का संकल्प लिया।

सायं 3:00 बजे: बाल सभा का आयोजन किया गया। जिसकी संयोजिका कुमारी तरु सिंघल व बहन अनिता सैनी रहीं। धर्मसाथियों के बच्चों के भिन्न मिशन स्कूल, तिसंग व मस्ती की पाठशाला के बच्चों ने अपने प्रदर्शन से सभी का मन मोह लिया। श्रीमती विनीता भण्डारी जी ने बच्चों को पुरस्कार दिये।

सायं 5:00 बजे: इस सत्र की संचालिका डॉ. सीमा शर्मा रहीं। मुख्य अतिथि 'प्रभ आसरा' पदमपुर के संस्थापक सरदार हरिसिंह जी रहे। सभापति डॉ. नवनीत जी रहे। साधना के विषय 'अमृत के तुम हो भण्डार' पर बोलते हुए आज के वक्ता श्रीमान् अशोक रोचलानी जी ने बताया कि 'अमृत' के बारे में मान्यता है कि यह देवताओं और राक्षसों द्वारा समुद्र मंथन के दौरान मिला था, परन्तु यहाँ हम एक दूसरे ही अमृत के बारे में विचार करेंगे। वह अमृत है भगवान् देवात्मा की शिक्षाओं का अमृत।

श्रीमान् अशोक जी ने आगे बताया कि देवात्मा ने हमें जो अमृत पिलाया वह है 'आत्मा के ज्ञान' और 'सम्बन्धों की शिक्षा' से उत्पन्न हुआ अमृत। हमारे सम्बन्धों में अमृत (हितकर मेल) भरा है या जहर (अनमेल), यह हमारे व्यवहारों से प्रकट होता है। आत्मा हमें दिखती नहीं, परन्तु उसकी उपस्थिति हमारे क्रिया कलापों से सिद्ध होती है। उन्होंने यह भी बताया कि भगवान् देवात्मा हमें 'देवज्योति' और 'देवतेज' प्रदान करते हैं। देवज्योति हमें हमारी आत्मा के रोग, यथा-जलन, कुढ़न, हिंसा, अहंकार आदि दिखाती है और देवतेज उनके बचने का बल प्रदान करता है।

इन्सान इतना सुख अनुरागी हो गया है कि वह अपनी 'मैं' से आगे देख ही नहीं पाता। मैं, मेरी पत्नी और मेरे बच्चे बस, इससे आगे सब सम्बन्ध बेकार। देवात्मा ने सम्बन्धों के इस नर्क को देखा और उनमें अमृत (मधुरता) घोलने का काम किया। देवात्मा के 'देवप्रभाव' हमारी आत्मा में उच्च परिवर्तन लाते हैं और उससे हमारे भाव बदलते हैं और आत्मा क्योंकि एक भावशक्ति है, इसलिए उसमें भी उच्च परिवर्तन आता है और यह उच्च परिवर्तन हमारे सम्बन्धों में अमृत घोलता है।

अन्त में, उन्होंने 2002 से अब तक के मिशन के इतिहास व प्रगति का वर्णन किया। परलोक सन्देशों का हितकर सिलसिला व 'विश्वास चिकित्सा' कैसे शुरु हुई, इसके बारे में बताया। यह सब अमृत ही तो है, जो देवात्मा बाँट रहे हैं। इन सन्देशों पर आधारित सैंकड़ों शिविरों में अमृत बाँटता रहा है। 'विश्वास चिकित्सा' रूपी अमृत

व्यसनों से बचो, ताकि लम्बी उम्र हो।

विशेष रूप से भोपाल, दिल्ली और तिसंग में बँट रहा है, लोगों की बीमारियाँ बिना दवाई के ठीक हो रही हैं। यह अमृत और बँट सके, ऐसी है शुभकामना!

इसके बाद मुख्य अतिथि सरदार हरिसिंह जी ने बताया कि प्रभ आसरा पदमपुर में 400 के लगभग बेसहारों की देखभाल गुरु कृपा से हो रही है। ये 400 लोग ही संस्था चला रहे हैं, हम नहीं चला रहे हैं। क्योंकि यदि वे ना होते तो संस्था भी नहीं होती। उन्होंने वहाँ हो रही सेवाओं के बारे में विस्तार से बताया। सबसे अन्त में डॉ. नवनीत अरोड़ा जी ने सरदार हरिसिंह जी के चरणों में नमन किया और उनके कार्यों की भूरी-भूरी प्रशंसा की। डॉ. सीमा जी ने सभी का धन्यवाद व आभार व्यक्त किया।

रात्री 8:30 बजे: सत्य धर्म बोध मिशन ट्रस्ट की मीटिंग हुई। आगामी तीन वर्षों हेतु Executive Board का गठन किया गया। वर्ष में मिशन की उपलब्धियों हेतु पूरम पूज्य भगवान् देवात्मा को धन्यवाद देने के साथ यह मीटिंग समाप्त हुई।

महाशिविर का अंतिम दिन (21 दिसम्बर, 2016)

प्रातः 9:00 बजे: भगवन् की छवि के अर्चन, दीप प्रज्ज्वलन व मंगलकामना के बाद मिशन के प्रचारक श्रीमान् जवाहरलाल जी ने साधना के विषय 'क्यों न जुड़ूँगा?' पर बोलते हुए बताया कि भगवान् देवात्मा के दर से जुड़कर जीवन का सर्वांगीण विकास होता है, तो फिर इस दर से जुड़ने में डर कैसा? उन्होंने यह भी बताया कि इस दर से जुड़ने के कुछ नियम हैं, जो उन नियमों को पूरा करता है, वह इस दर से जुड़ सकता है।

इसके बाद डॉ. नवनीत अरोड़ा जी ने इस वर्ष मिशन से जुड़ने वाले 21 शिष्य-शिष्याओं, 3 वरिष्ठ सदस्यों तथा 8 श्रद्धालुओं का परिचय कराया। इसके बाद इन सभी को अलग-अलग समूहों में शपथ दिलाई गई। इस बार मिशन से जुड़ने वाले सभी वर्गों की सूची निम्न प्रकार है-

वरिष्ठ सदस्य

(1) श्रीमती शारदा बत्रा, रुड़की, (2) श्रीमती सीमा गुप्ता, रुड़की, (3) श्रीमती रेणु वाधवा, रुड़की

शिष्य/ शिष्याएं

(महाशिविर से पूर्व)

(1) श्री यशपाल सिंघल फरीदाबाद, (2) श्रीमती रेणु सिंघल, फरीदाबाद (हरियाणा), (3) श्री सतीश कुमार मेहता, रुड़की (उत्तराखण्ड), (4) रेणु (नीता) सैनी, हिसार

भोजन और भजन शान्ति से करो।

(हरियाणा), (5) श्री कैलाश चन्द्र अग्रवाल, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

(महाशिविर के अवसर पर)

(6) श्री देव अर्चना प्रभाकर, पंचकूला (हरियाणा), (7) श्रीमती अनीता रोचलानी, ग्वालियर (मध्य प्रदेश), (8) डॉ. काशी राम शर्मा, बल्लभगढ़, फरीदाबाद (हरियाणा), (9) श्री सचिन कुमार, देवबन्द, सहारनपुर (उत्तर प्रदेश), (10) श्री अमित बधवान, कपूरथला (पंजाब), (11) श्री मनीशा शर्मा, लांझणी, कांगड़ा (हिमाचल प्रदेश), (12) श्री पुरुषोत्तम दास सिंगल, सिरसा (हरियाणा), (13) श्रीमती दर्शना रानी सिंघला, सिरसा (हरियाणा), (14) श्रीमती सविता देवी, रुड़की (उत्तराखण्ड), (15) श्री सौरभ कुमार, रुड़की (उत्तराखण्ड), (16) श्री मुरारी लाल गुप्ता, रुड़की (उत्तराखण्ड), (17) श्री मानिक धीमान, रुड़की (उत्तराखण्ड), (18) एकता खण्डपा, पदमपुर, गंगानगर (राजस्थान), (19) शालू मेहरा, पदमपुर, गंगानगर (राजस्थान), (20) श्रीमती पूनम रानी, पदमपुर, गंगानगर (राजस्थान), (21) श्रीमती आशा अरोड़ा, रुड़की (उत्तराखण्ड)

श्रद्धालु/ सहायक

(महाशिविर से पूर्व)

(1) श्रीमती विमला देवी, बंगा (पंजाब), (2) श्री अर्पित सिंगल, फरीदाबाद (हरियाणा)

(महाशिविर के अवसर पर)

(3) श्री पवन संगल, शामली (उत्तर प्रदेश), (4) श्री बृजमोहन जैरथ, लुधियाना (पंजाब), (5) श्री मनोज शर्मा, सहारनपुर (उत्तर प्रदेश), (6) श्री मनोज कुमार, पदमपुर (राजस्थान), (7) मेघा वधवा, रुड़की (उत्तराखण्ड), (8) श्री प्यारा सिंह, गंगानगर (राजस्थान), (9) श्रीमती शिमला देवी, रुड़की (उत्तराखण्ड), (10) श्री नथूराम कोण्डल, सोलन (हिमाचल प्रदेश)

अन्त में पूजनीय भगवान् व अन्य सहायकारी शक्तियों तथा समस्त सेवाकारियों को खड़े होकर सभी ने धन्यवाद दिया। धर्मसम्बन्धियों ने मिशन की गतिविधियों हेतु दिल खोलकर दान दिया। इस महाशिविर का सारा खर्च भी दान से पूरा हुआ। देवआरती व भगवान् देवात्मा की जय के साथ इस अति हितकर व देव प्रभावों से ओत-प्रोत महाशिविर का समापन हुआ। सभी ने एक दूसरे से गले मिलकर व हितकर संकल्पों के साथ अपने-अपने स्थानों को प्रस्थान किया। सबका शुभ हो!

कोई क्या करता है उसे देखने की ज़रूरत नहीं। आप क्या करते हैं,
उसे ज़रूर देखना चाहिए।

न्यूजर्सी केन्द्र समाचार

यहाँ पर हमारे साथी सेवक अनुराग व साक्षी रोचलानी तथा नवीन व शिल्पा देम्बला अपने-अपने घरों पर पूरा परिवार मिलकर रोज शाम को भजनों का गान करते हैं। डफली, मंजीरा आदि के साथ भजन गाने से बहुत अच्छा वातावरण बनता है। छोटे बच्चे भी पूरा भाग लेते हैं। बहुत प्रभाव रहते हैं। पिछले दिनों साक्षी जी के माता-पिता श्री ईश्वर लाल व माया जी भीलवाड़ा से तथा अनुराग जी के मामा मामी जी श्री मनोहर व नीलम जी अचन्तानी गुवाहटी से न्यू जर्सी आए हुए थे, तो खूब रौनक रही।

पिछले दिनों घरों पर दो साधन भी रखे गए। एक साधन श्री मनीश अरोड़ा जी के निवास पर रखा गया। उनका परिवार तथा हमारे दोनों परिवार शामिल हुए। कु. पंखुड़ी अरोड़ा शामिल हुईं व भजन गान में सहायक बनीं। 'सम्बन्धों में मधुरता' विषय पर श्रीमान् अशोक रोचलानी जी ने साधन करवाया। श्रीमती अर्चना अरोड़ा जी ने बयान किया। प्रायः 25 जन लाभान्वित हुए। हीलिंग सेवा का कार्य काफ़ी होता रहा, कई जन लाभान्वित हुए। परस्पर बातचीत के द्वारा अनेक जनों ने भगवान् देवात्मा की शिक्षा व महिमा बताई जाती रही।
-अशोक रोचलानी

हमारे अद्वितीय गुरु देवात्मा जी का 166 वां जन्म महोत्सव भारत में कई स्थानों पर मनाए जाने के भिन्न न्यू जर्सी (अमेरिका) में भी मनाया गया। 20 दिसम्बर को सूर्योदय से पूर्व कई परिवारों ने भगवान् देवात्मा का जन्म भजनों के गान व निज के साधन से मनाया। 25 दिसम्बर रविवार के दिन इसी उपलक्ष्य में विशेष रूप से सामूहिक साधन रखा गया। इस महोत्सव पर रोचलानी परिवार, देम्बला परिवार, अरोड़ा परिवार तथा गोवर परिवार आदि एकत्र हुए। न्यू जर्सी में ही अध्ययनरत कु. पंखुड़ी अरोड़ा भी शामिल हुईं। अनुराग साक्षी रोचलानी के निवास पर यह साधन रखा गया। अनुराग जी ने साधन करवाया। विषय था- 'भगवान् से हमने क्या पाया?' तत्पश्चात् श्रीमती अर्चना अरोड़ा जी ने देवाश्रम मोगा में बाल्यकाल के दौरान मनाए महोत्सवों की सुन्दर यादों को सांझा किया। प्रायः 25 जन इस साधन में शामिल थे, कई जनों ने अपने भाव प्रकाशों में भगवान् देवात्मा की शिक्षाओं पाए लाभों के विषय में बयान किया। बच्चों ने भी भजन गाकर सक्रिय भागीदारी निभाई। विशेष भोजन के द्वारा सत्र का समापन किया गया। हितकर बातचीत का दौर चलता रहा। सभी ने इस साधन के प्रभावों से नववर्ष 2017 के लिए स्वयं को ऊर्जावान व स्फूर्तिवान महसूस किया।
- अनुरोग रोचलानी

जिन्दगी में अच्छे साहित्य का सहारा लेना बहुत ज़रूरी है।

विवाह अनुष्ठान

हर्ष का विषय है कि हमारे साथी सेवक चिरंजीव साहिल (सुपुत्र श्रीमती जसविन्द्र कौर व श्री तेज बहादुर जी सैनी, बिलासपुर, छत्तीसगढ़) का शुभ विवाह कुमारी नेहा (सुपुत्री श्रीमती स्नेह लता व श्री सतनाम सिंह जी सैनी, हलधरी, अम्बाला, हरियाणा) के संग दिनांक 15 जनवरी, 2017 को हुआ। प्रो. नवनीत अरोड़ा जी सपरिवार गाँव हलधरी (अम्बाला) में पहुँचे तथा देव अनुष्ठान विधि के अनुसार विवाह अनुष्ठान सम्पन्न कराया। वर-वधू ने भली-भाँति प्रतिज्ञाओं का उच्चारण किया। इस अवसर पर पारिवारिक जनों के भिन्न कुछ सामाजिक जन भी उपस्थित रहे। श्रीमान् जवाहर लाल जी अनुष्ठान सम्पन्न कराने में सहायक बने तथा 14 जनवरी को सम्पन्न अन्य पारिवारिक अनुष्ठानों में शामिल हुए। ज्ञातव्य है कि श्री साहिल जी सम्मान के योग्य मास्टर इन्द्र सिंह जी के प्रपौत्र व श्री शुभ देव सिंह जी (शादीपुर, अम्बाला) के पौत्र हैं। आपके माता-पिता छत्तीसगढ़ राज्य में खेतीबाड़ी के उद्देश्य से रहते हैं। नवयुगुल दम्पति को भावी गृहस्थ जीवन के लिए शुभकामनाएं! समस्त परिवार का शुभ हो! इस अवसर पर मिशन हेतु रु 2000/- दानस्वरूप प्राप्त हुए।

बरसी की सभा

08 जनवरी, 2017 को दोहपर 3:30 बजे सुश्री नीता गुप्ता सुपुत्री श्री एम. एल. गुप्ताजी के सम्बन्ध में बरसी की सभा रखी गई। श्री गुप्ता जी महाशिविर 2016 में ही सेवक बने हैं। शोक का विषय है कि आपने अपनी प्रिय सुपुत्री को प्रायः एक वर्ष पूर्व खो दिया था। इसी बीच आपकी हमारी साथी सेविका सुश्री अनिता सैनी जी (जो इन्हीं की सोसायटी में रहती हैं) से वार्ता हुई। आपको 'अटल सत्य' पुस्तक दी गई, उससे आप प्रभावित हुए। मंगलकामना की विधि जान लेने से आपको राहत मिली। फिर देवाश्रम में आयोजित नियमित साधनों में आने का सिलसिला चला और आप जुड़ते चले गए।

उपर्युक्त बरसी की सभा प्रो. नवनीत जी ने कराई। देव प्रभावदायक मण्डल बना। कुछ सामाजिक जनों के भिन्न श्री गुप्ता जी के पारिवारिक व सोसायटी से भी कुछ लोग शामिल हुए। कुल मिलाकर प्रायः 35 जन साधन से लाभान्वित हुए। मिशन कार्यो हेतु रु 2100/- परिवार की ओर से दानस्वरूप मिले। परलोकगत आत्मा का शुभ हो!

आप जीवन में कितने ही ऊँचे क्यों न उठ जाएँ, पर अपनी गरीबी और कठिनाई के दिन कभी मत भूलिए।

प्रेरणास्पद उद्बोधन

03 जनवरी 2017 को दोपहर 3:30 बजे Hero Motocorp Ltd. हरिद्वार में डॉ. नवनीत अरोड़ा जी ने **Achieving Excellence in Life** विषय पर प्रेरणास्पद उद्बोधन दिया। प्रायः दो घण्टे तक चले इस सत्र से इस कम्पनी के प्रायः 90 मैनेजर्स व सेक्शन हेड्स लाभान्वित हुए। लगभग रू 3000/- की पुस्तकें श्रोताओं द्वारा खरीद की गईं।

10 जनवरी, 2017 को सुश्री अनिता सतयावती जी के साईं सोसायटी, आदर्श नगर, रुड़की में स्थित निवास पर माता-पिता सन्तान के सम्बन्ध में एक सभा प्रो. नवनीत जी ने करवाई। साधन के अन्त में उपस्थिति बच्चों ने माता-पिता को फूलों के हार पहनाए व उनका आशीर्वाद लिया। देव प्रभाव दायक मण्डल से सभी प्रभावित थे। इससे प्रायः 40 जन लाभान्वित हुए। सबका शुभ हो!

शोक समाचार

❖ शोक का विषय है कि हमारे पुराने वयोवृद्ध साथी सेवक श्रीमान् गिरवर प्रसाद जी का 19 दिसम्बर, 2016 को चण्डीगढ़ में प्रायः 99 वर्ष की आयु में देहान्त हो गया। महाशिविर के दौरान सूचना मिलने पर उसी दिन सामूहिक मंगल कामना की गई। 25 दिसम्बर, 2016 को उनके सम्बन्ध में रखी गई। श्राद्ध सभा में 36-बी, चण्डीगढ़ में प्रो. नवनीत अरोड़ा जी सम्मिलित हुए। श्रीमान् जी का परलोक में हर प्रकार से शुभ हो! सम्पर्क सूत्र: नीरज शर्मा (सुपुत्र) मोबाईल नं०- 93505-76097

❖ शोक का विषय है कि श्री रणदीप भाटिया, ज्वालापुर (हरिद्वार) का 08 जनवरी, 2017 को प्रायः 49 वर्ष की आयु में देहान्त हो गया। आप बहुत योग्य फोटोग्राफर व पेन्टर थे। आपने 2003 में परम पूजनीय भगवान् देवात्मा की (जन्मदिवस की पोशाक वाली) पेन्टिंग बनाई, जो तभी से आज तक महाशिविर के अवसर पर शोभायमान होती है। तत्पश्चात् 2010 में भगवान की समाधि अवस्था वाली पेन्टिंग बनाई, जो कि देवाश्रम रुड़की के साधनालाय में सुशोभित है। आपका परलोक में हर प्रकार से शुभ हो!

❖ शोक का विषय है कि हमारे पुराने वयोवृद्ध साथी सेवक श्री खैराती लाल जी वोहरा का दिल्ली में 11 जनवरी, 2017 को प्रायः 101 वर्ष की आयु में देहान्त हो गया। आपने श्रद्धेय एस. पी. कनल जी के सहयोगी रहकर साहित्य के क्षेत्र में बहुमूल्य योगदान दिया। आपका परलोक में हर प्रकार से शुभ हो!

छोटा सा समाधान बड़ी लड़ाई समाप्त कर देता है, पर छोटी सी ग़लतफहमी बड़ी लड़ाई पैदा कर देती है।

भावी शिविर

आत्मबल विकास शिविर, रुड़की

भावी शिविर

23-26 मार्च, 2017

रिश्तों में नई रोशनी

दिनांक	प्रातःकालीन सत्र 9:00-10:30	सायंकालीन सत्र 5:30-7:00
23.03.2017	---	जीवन का आधार
24.03.2017	देखने की आँख	भाई-बहन का रिश्ता
25.03.2017	जुबां कहाँ से लाऊँ	पति-पत्नी का रिश्ता
26.03.2017*	माता-पिता सन्तान का रिश्ता	---

* 26 मार्च 2017 को सम्पन्न साधन प्रातः 10 बजे से प्रारम्भ होगा।

शिविर स्थल: देवाश्रम, 32, सिविल लाइन्स, रुड़की

नोट: 1. शिविरार्थी सपरिवार आये, तो ज्यादा लाभ होगा।

2. कृपया अपने आने की पूर्व सूचना 94672-47438, 99271-46962 पर दें।

शुभ संग्राम

14 जनवरी, 2017 को यमुनानगर में श्रीमान् जवाहरलाल जी, डॉ. नवनीत अरोड़ा जी व सुश्री अनिता जी ने विजिट का कार्य किया। श्री सुभाष मेहता जी साथ रहे। वयोवृद्ध धर्मसाथी चौ. रामसिंह जी, श्री मदनलाल जी, श्री अमृत अग्रवाल जी व श्रीमती संतोष नारंग जी को मिले। भूतपूर्व कुलपति श्री के.एल. जौहर जी से भेंट की। इस विजिट से मिशन हेतु दानस्वरूप रु 6700/- प्राप्त हुये।

For mission details, Visit us : www.shubhho.com

सम्पर्क सूत्र :

सत्य धर्म बोध मिशन

रुड़की (01332-270231), गुड़गांव (97170-84564), भोपाल (0755-2759598)
सहारनपुर (98976-22120), गुवाहटी (94351-06136), गाज़ियाबाद (93138-08722)
कपूरथला (98145-02583), चण्डीगढ़ (0172-2646464), पदमपुर (83023-99241)
अम्बाला (94679-48965), मुम्बई (022-29259390), पानीपत (94162-22258)

श्री ब्रिजेश गुप्ता द्वारा प्रकाशित
तथा कृश ऑफसेट प्रैस, सहारनपुर में मुद्रित, 711/40, मथुरा बिहार, मकतूलपुरी, रुड़की से प्रकाशित
सम्पादक - डॉ० नवनीत अरोड़ा, D-05, हिल व्यू अपार्टमेंट्स, आई.आई.टी. परिसर
ज़िला हरिद्वार - 247667 (उत्तराखण्ड) 01332-271000, 94123-07242